चतुर्थ अध्याय

'संवाद या कथोपकथन'

चतुर्थ अध्याय
'संवाद या कथोपकथन'

प्रस्तावना : - सुदर्शन भटिया के 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों के संवाद पात्रों के चरित्र-चित्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अत: विवेच्य उपन्यासों के संवाद की विशेषताएँ देखना आवश्यक है।

''संवाद या कथोपकथन का उपन्यास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यदि उन्हें तर्क-संगत ढंग से एवं कुशलतापूर्वक संगठित किया जाए, तो वे उपन्यासों के सर्वाधिक रोचक तत्व बन जाते हैं। कथोपकथनों की भावाभिव्यक्ति की नाटकीयता से ही पात्रों के चरित्रों पर सुंदर ढंग से प्रकाश पड़ता है। उनका व्यक्तित्व पूर्णतया स्पष्ट होता है और पाठकों तथा पात्रों के मध्य निकट संपर्क स्थापित होता है। प्राय: उपन्यास कुछ तो ऐसे लिखे जाते हैं, जिनमें अधिकांश कथा का विस्तार कथोपकथनों के माध्यम से किया जाता है और उसी आधार पर प्राय: कह दिया जाता है कि उपन्यास और नाटकों में घनिष्ठ संबंध है। अत: इतना तो स्पष्ट ही है कि कथोपकथन उपन्यासों में अपना उल्लेखनीय स्थान बना लेते हैं।''[1]

कथोपकथनों का उद्‌देश्य भी महत्त्वपूर्ण होता है। कुशल उपन्यासकार कथोपकथन के माध्यम से कथानक का विकास करता है, इससे कथानक में नाटकीयता एवं सजीवता की वृद्‌धि तो होती है, साथ ही औपन्यासिक शिल्प का श्रेष्ठ रूप सामने उपस्थित होता है। एक कुशल उपन्यासकार जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता एवं परिस्थितियों की यथार्थता एवं अनुभूतियों की गहनता की पकड है। कथोपकथनों के माध्यम से ही विश्लेषण एवं विवरण देने का भी कार्य करता है। अत: पात्रों के द्‌वारा जिस कथोपकथन का प्रयोग होता है, उससे उनके व्यक्तित्व के संबंध में पर्याप्त अनुमान लगाया जा सकता है, साथ ही उपन्यास की परिस्थितियों, उसकी जटिलताओं, पात्रों के रहस्यमय अन्तर्द्वन्द्वों आदि की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए कथोपकथनों द्‌वारा ही उद्‌देश्य की नाटकीय ढंग से पूर्ति होती है। कथोपकथनों का तीसरा उद्‌देश्य भी होता है। वह यह कि इन्हीं के माध्यम से लेखक अपने उद्‌देश्य एवं विचार तथा जीवन दर्शन को भी स्पष्ट करता चलता है।''[2]

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 91.

2. वही, पृ. 93, 94.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

कथोपकथनों की अनेक विशेषताएँ होती है। कथोपकथन की अनुकूलता एवं सार्थकता मुख्य विशेषता होती है। जिस प्रकार का घटना-प्रसंग हो, जैसा वातावरण हो, वैसे ही कथोपकथनों का प्रयोग होना चाहिए। वास्तव में कथोपकथनों को कथावस्तु से ऐसे घनिष्ठ रूप में संबंधित होना चाहिए कि वह उसका एक अनुपेक्षणीय सार्थक अंग प्रतीत हो। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दोनों ही रुपों से कथोपकथनों को कथानक का विकास करना चाहिए और पात्रों के व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए उनके चरित्र के संबंध में गोपनीय तत्वों का रहस्योद्‌घाटन करना चाहिए। जिससे पात्रों के संबंध में पाठकों की छिपी हुई जिज्ञासाएँ शांत हो सके और पाठक उनसे पूर्ण रूप से परिचित हो सके। कथोपकथनों का कभी भी और किसी भी सामान्य अथवा असामान्य परिस्थितियों में प्रयोग नहीं होना चाहिए, जिनका न तो कथानक के विकास में परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से कोई संबंध है, और न ही वे पात्रों के व्यक्तित्व को स्पष्ट कर उनके चरित्र को प्रकाशित करने में सक्षम है। ऐसे अनर्थक, सारहीन, कथोपकथन चाहे वे कितने ही रोचक, विचारोत्तेजक एवं कुशलता-पूर्वक उपस्थित किए गए क्यों न हों, उपन्यासों की कलात्मकता को न्यून कर उसे बोझिल बना देते हैं। उपन्यासों की एकता के मूलभूत नियम को ऐसे कथोपकथन खंडित करते हैं। अतः विवेच्य उपन्यासों के संवाद शैली का अनुशीलन जरूरी है।

4.1 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास के संवाद या कथोपकथन :

"संवाद या कथोपकथन उपन्यास का तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है। यह कथा का विकास करता है तथा पात्रों के चरित्र-निर्माण में सहायक होता है। कथोपकथन के द्‌वारा उपन्यासकार अपनी कृति में वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता लाता है और उसके संगठन से कथानक का विस्तार करता है। पात्र आपस में जो वार्तालाप करते हैं उसे संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। इससे कथा-विकास में गति मिलती है।"[1] 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में स्थान-स्थान पर संवाद सृष्टि दृष्टिगोचर होती है। लेकिन संवाद लंबे नहीं होने चाहिए। लंबे-लंबे संवाद पाठकों के मन में साहित्य कृति के प्रति निराशा पैदा करते हैं। इससे साहित्य का आशय आम पाठकों के ध्यान में नहीं आता। इसलिए कृति के संवाद पाठकों को आकर्षित करने वाले होने चाहिए।

---

1. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - हिंदी उपन्यास उद्‌भव और विकास, पृ. 35.

डॉ. श्यामसुंदर दास के मतानुसार, "इस तत्व के द्वारा हम उसके पात्रों से विशेष परिचित होते हैं और दृश्य की सी सजीवता और वास्तविकता का बहुत कुछ अध्ययन करते हैं।"[1] अत: कथानक को गतिशील बनाने तथा सजीवता लाने के लिए संवाद जरूरी हैं।

सुदर्शन भाटिया ने 'कल्लो' उपन्यास में स्वगत, प्रकट, लंबे तथा छोटे संवादों की योजना की है।

4.1.1 स्वगत संवाद :-

पात्र अपने-आप से ही बात करता है, तो उसे स्वगत संवाद कहा जाता है। 'कल्लो' उपन्यास में स्थान-स्थान पर स्वगत संवाद दिखाई देते हैं। युवक नामक पात्र का स्वगत संवाद देखिए, - "कब तक इस लुभावने वातावरणमें रहना चाहिए उसे। जी नहीं चाहता, इस स्थान को, यहाँ के चश्मों को, यहाँ की हरियाली को, यहाँ के पर्वतों के दृश्यों को और यहाँ की महारानी कल्लो को छोड कर दूर जाए। मगर नहीं, मैं एक राही हूँ। मेरी मंजिल अनजानी है। मेरा रास्ता भी लंबा है। मैं तो केवल विश्राम की इच्छा से यहाँ रूका। केवल विश्राम के लिए। रहने के लिए नहीं।"[2]

इस कथन ये यह स्पष्ट होता है कि युवक मन ही मन कल्लो और उसके गाँव से इतना प्रभावित हो जाता है, कि वह उस गाँव को छोडना नहीं चाहता।

'कल्लो' का स्वगत संवाद देखिए - "परदेसी ! तुम कितने अच्छे हो। इतने साल कहाँ छिपे रहे ... पहले क्यों नहीं आए ... मेरे जीवन में खुशियाँ लाए भी तो इतनी देरी से ... हाए रे परदेसी ! .... मैं मर जाऊँ।"[3]

यहाँ स्पष्ट होता है, कि युवक के आने से कली के जीवन में खुशियाँ आयी है।

'कैलाश' का स्वगत संवाद देखिए - "आज मैं अपने गाँव में हूँ। कली की बगिया में। फूलों की फुलवाडी में। .. किंतु एक बात है .. सारी फुलवाडी में एक ही ऐसा फूल है, जो मुझे पसंद है। अन्य नहीं। चलो ... आज उससे भेंट हो जाए।"[4]

---

1. डॉ. श्यामसुंदर दास - साहित्यालोचन, पृ. 205.
2. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 13.
3. वही, पृ. 72.
4. वही, पृ. 34.

इस कथन से यह स्पष्ट होता है, कि कैलाश मन-ही-मन कली से प्रेम करता है। और उसे पाना चाहता है। इस प्रकार इस स्वगत कथन से कैलाश के चरित्र पर प्रकाश पडता है।

4.2 प्रकट संवाद :-

पात्र जब आपस में बोलते हैं, तो उसे प्रकट संवाद कहा जाता है। 'कल्लो' उपन्यास में स्थान-स्थान पर प्रकट संवाद दिखाई देते हैं।

"कल्लो मैं तुम्हें कितनी बार बता चुका हूँ, कि मेरा कोई घर नहीं, मेरा कोई गाँव नहीं। मैं तो बेघर हूँ, बेचारा। उडता हुआ पंछी। न ठौर, न ठिकाना। न घर न बार। मैं तो चलता-फिरता पानी हूँ। रूकना मुझे पसंद नहीं। जब मेरा ही कोई ठिकाना नहीं, घर नहीं, तो मैं तुम्हें कहाँ ले जाऊँगा। मैं तुम्हें कहा रखूँगा। जरा सोचो ! तुम मेरे साथ नहीं जा सकोगी। कल्लो. मैं तुम्हें बेघर नहीं करना चाहता।" "वह ठीक है। मगर तुम मेरे से जुदा न हो सकोगे। मेरा प्यार तुम्हें मुझ से अलग न होने देगा। तुम्हीं तो कहते थे कि मैं तुम्हारी आत्मा हूँ। फिर बिना आत्मा के तुम कैसे जिन्दा रहोगे।"[1]

इससे यह स्पष्ट होता है, कि कल्लो युवक से बहुत प्रेम करती है।

"राजेश ! इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। हाँ, इतना जान लो, आज से मैं बदल गया हूँ। मेरे विचार बदल गए हैं। अब मेरा हर काम बदल जाएगा।" "तू क्या कह रहा है? क्या सूँघ लिया है तू ने ? जरा मैं भी तो जानूँ।"[2]

"सूँघा कुछ नहीं। मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि मैं अब आदर्श लडका बनने जा रहा हूँ। समझो - मेरा कायाकल्प कर दिया गया है। सब बुराइयाँ त्याग दी है। मैं मन से वचन से, कर्म से, अच्छा बनूँगा, इतना अच्छा कि लोग मेरे पीछे-पीछे चले। मैं उन्हें राह दिखाऊँगा।"[3]

"जो तुम्हारे मन में आए, सो करो ? मुझे क्या? मगर हाँ, यह नहीं बताओगे कि गुरू किसे माना? वह कौन है जिसका रंग तुम्हारे पर कुछ ही घंटों में चढ़ गया है? हमारे बरसों के रंग को भी छिपा लिया उसके रंग ने। जरा हमें भी तो पता चले।"[4]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लों, पृ.10.
2. वही, पृ. 92.
3. वही, पृ. 92.
4. वही, पृ. 92.

इससे यह स्पष्ट होता है, कि कैलाश शीला से प्रभावित होकर सुधरना चाहता है। उसके मन में प्रेमभाव जाग्रत होता है।

4.3 लंबे संवाद :

सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास में लंबे संवाद नहीं दिखाई देते है।

4.4 छोटे संवाद :

'कल्लो' उपन्यास में स्थान-स्थान पर छोटे संवाद दिखाई देते है। उपन्यास की शुरुआत ही कल्लो और युवक के छोटे संवाद से ही होती है। देखिए -

"परदेसी !"

"हूँ।"

"मैं तुम्हें कैसी लगती हूँ!"

"अच्छी!"

"कितनी अच्छी?"

"बहुत अच्छी!"

"तुम मुझे चाहते हो?"

"हाँ।"

"कितना चाहते हो?"

"बहुत ज्यादा।"

"फिर भी?"

"बस, बता नहीं सकता, पर मैं तुम्हें बहुत बहुत ज्यादा चाहता हूँ।"

"सच?"

"बिलकुल सच!"

"तुम मेरे से अलग होना चाहोगे?"

"कभी नहीं।"

"झूठ तो नहीं बोलते ?"

"बिलकुल भी नहीं।"

"कहो, राम कसम।"

"कह जो दिया।"

"नहीं, कहो, राम कसम।"[1]

उक्त संवाद से यह स्पष्ट होता है, कि कल्लो अपने प्रेमी युवक (परदेसी) से यह जानना चाहती है, कि वह उससे कितना प्रेम करता है। यहाँ यह स्पष्ट होता है, कि कल्लो और युवक दोनों एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते है।

कैलाश और कल्लो के बीच का छोटा संवाद देखिए -

"परदेसी ! तुम आ गए?"

"हाँ।"

"खाना खाओगे ?"

"नहीं।"

"दीपक जलाऊँ ?"

"नहीं!"

"इतनी देर कैसे हो गई ?"

"बोलो भी ?"

" ....”

"साईकल बिगड गई थी क्या ?"

"हाँ।"

"थक गए होंगे ?"

"नहीं।"

"दिन कैसा बीता?"

"अच्छा।"[2]

यहाँ कली कैलाश को युवक समझकर प्रश्न पूछती है, लेकिन उसके छोटे-छोटे उत्तरों से कली को शक होता है, कि यह युवक नहीं बल्कि कोई और है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 9.
2. वही, पृ. 45, 46.

"परदेसी।"

"हाँ, बोलो।"

"किधर की तैयारी है?"

"कहीं की नहीं।"

"फिर चलो, अन्दर, मेरे पास बैठो।"

"वहाँ क्या है?"

"कुछ नहीं, बातें करेंगे।"

"क़्या बातें करोगी ?"

"यही कहानियाँ, कुछ मैं, कुछ तुम।"[1]

इससे यह स्पष्ट होता है, कि कली युवक को अपने से अलग नहीं होना चाहती।

"बाबा !"

"हाँ, क्या बात है?"

"मैं आज नगर जा रहा हूँ।"

"कब लौटोंगे ? क्या काम है?"

"बस, यों ही, गाँव का ही कुछ समझें ?"[2]

उक्त संवाद से यह स्पष्ट होता है, कि युवक गाँव सुधार के लिए कार्य करता है।

"कैलाश !"

"हूँ।"

"हो जाओ तैयार।"

"किस लिए ?"

"बदला लेने के लिए।"

"किस से?"

"अपने दुश्मन से।"[3]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 59, 60.
2. वही, पृ. 63.
3. वही, पृ. 101.

इस संवाद में राजेश अपने मित्र कैलाश को युवक से बदला लेने के लिए कहता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास के संवाद :

4.1.1 स्वगत संवाद :-

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में स्थान स्थान पर स्वगत संवाद दिखाई देते है। "कितना सुंदर युवक है। शरीर सुदृढ। छाती चौडी। कद लंबा। रंग गोरा। चेहरे पर तेज। प्रखर बुद्धि, नौजवान। मुझे ऐसे ही एक युवक की तलाश थी। ... आज मिल गया. शायद मैं उसी की बाट जोह रहा था। गिरीश मेरी सुमन के लिए उपयुक्त वर रहेगा। कितनी अच्छी जोडी बनेगी। दोनों खूब जचेंगे। गिरीश को पाकर मेरी बेटी सुमन बेहद प्रसन्न होने लगेगी। बेटी को प्रसन्न रखना ही मेरा ध्येय है।"[1]

उक्त संवाद से यह स्पष्ट होता है कि गिरीश को देखकर अटलजी के मन में अपनी बेटी सुमन के लिए अच्छा वर मिलने की खुशी होती है और वह उसे बिना कुछ पूछे अपने मन में अपनी बेटी के लिए चुन लिया।

पुष्पा का स्वगत संवाद देखिए - "मनुष्य अपने सुखों के लिए अनैतिकता के अश्व पर सवार होकर, असत्य की लगाम हाथ में पकड, निर्दयता की छडी से उसे अग्रसर करता हुआ पाप-पथ पर बढ़ने में ढोंग का सहारा लेता है। वह तब तक इसी राह का राही बना रहता है जब तक पतन के गढ़े में पूर्णतया गिर नहीं जाता। चन्द रुपयों के लिए वह अपनी सन्तान की सौगन्ध खाने में भी हिचकिचाता नहीं।"[2]

इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य प्राणी कितना स्वार्थी होता है कि वह अपने सुख के लिए किसी असत्य का भी साथ देता है। और वक्त आने पर अपनी संतान की भी झूठी कसम खाता है।

4.2.2 प्रकट संवाद :-

"मैं आपको उन सबसे अधिक दूँगा, जो अब तक आपको कहा गया है। बस आपकी हाँ चाहिए। मैं आपको मालामाल कर दूँगा।... आप मेरा रिश्ता स्वीकार कर ले। इससे मेरी यह चिंता खत्म हो जाएगी।"

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 31
2. वही, पृ. 12, 13.

"नहीं, नही, यह तो आपस की बात है। लेना देना कोई जरूरी तो नहीं। हमें आप जैसे आदमी ढूँढ़ने से भी नहीं मिल सकते .... आपने जो देना है, अपनी बेटी को ही तो देना है, अपनी खुशी के लिए देना है।"[1]

इस संवाद से यह स्पष्ट होता है कि हमारे समाज में आज भी लोग दहेज के लालची दिखाई देते है। और बेटी के सुख के लिए माँ-बाप भी दहेज देते है।

गिरीश और सतीश का संवाद देखिए -

"मित्र! इस काम को पूरा करने तथा पुष्पा को बतौर जीवनसाथी पाने में यदि मेरे लायक, कभी भी, कोई कार्य हो तो मैं हर समय हाजिर हूँ।"

"मुझे पिता जी से डर लगता है। उन्हें कैसे कहूँगा ? पिताजी आपका बेटा प्यार-ब्यार करने लगा है। पहले तो शादी न करने की मेरी जिद थी, अब लगी है भागमभाग।"[2]

इस संवाद से यह स्पष्ट होता है कि गिरीश पुष्पा से बेहद प्यार करता है। लेकिन वह अपने पिताजी से यह बात कहने से डरता है। वह पहले अपने पिताजी से शादी न करने की जिद करता है। इसलिए पुष्पा के बारे में पिताजी से बात करने में वह डरता है। तब गिरीश का मित्र सतीश उसे इस कार्य में मदद करना चाहता है।

4.3.3 लंबे संवाद :-

सुदर्शन भाटिया जी के 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में लंबे संवाद दिखाई नहीं देते।

4.4.4 छोटे संवाद :-

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में अनेक छोटे-छोटे संवाद दिखाई देते है।

"आज हमारे साथ चाय।"

"नहीं, फिर कभी सही।"

"आज का भोजन हमारे साथ।"

"आज शाम हमारे गरीब निवास पर।"

"आज हम आपको निमंत्रित करते हैं। केवल कुछ देर के लिए।"[3]

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 81.
2. वही, पृ. 93.
3. वही, पृ. 34

गिरीश को जब कविराज की उपाधि मिलती है। तब सभी लोग उसे इस तरह आमंत्रित कर देते है। गिरीश और सुमन का छोटा संवाद देखिए -

"मैं कहाँ हूँ?"

"हमारे घर।"

"यह किसका घर है?"

"हमारा । मेरे पिताजी का।"

"अच्छा मजाक किया।"

"यह तो मैं समझ गया ... मगर।"

"हूँ ! आप जानना चाहते हैं कि मैं कौन हूँ।"[1]

इस संवाद में गिरीश जब रास्ते में गिर जाता है, तब सुमन उसे अपने घर में लाकर उसको दवा दारू करती है। गिरीश जब होश में आता है, तब वह पूछता है, कि मैं कहाँ हूँ। तब सुमन अपना पूरा परिचय देती है।

गिरीश और धन्ना का संवाद देखिए -

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"जी ! धन्ना।"

"कहाँ रहते हो ?"

"गुरदास पुर के एक गाँव में।"

"क्या तुम मेरा पर्स उडा लेना चाहते थे?"

"जी हाँ।"

"फिर क्यों नहीं उडाया?"

"बार-बार कोशिश तो की, पर पकडा गया।"[2]

इस संवाद से यह स्पष्ट होता है, कि धन्ना जेबकतरा है और वह गिरीश का पर्स उडाना चाहता है।

सुमन और अटलजी का संवाद देखिए -

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 39.

2. वही, पृ. 59.

"कहाँ जाना है, पिताजी ?"

"पठान कोट तक।"

"पठान कोट !"

"हाँ बेटी ! क्या बात है?"

"तो क्या आप गिरीश भैया को भी मिलेंगे? वह भी पठान कोट रहते हैं।"

"अरे, हाँ याद आया।"

"मिलेंगे न उन्हें ?"

"अवश्य।"

"पिताजी! तब तो गिरीश भैया से मेरी नमस्ते कह देना।"[1]

इस संवाद से यह स्पष्ट होता है, कि सुमन गिरीश जैसे भैया को पाकर बहुत खुश हो जाती है।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में संवाद या कथोपकथन प्रचुर मात्रा में दिखाई देते हैं, जो बहुत प्रभावशाली हैं। भाटिया जी के उपन्यास के संवाद कथानक को गति देने तथा पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने का काम करते हैं।

'कल्लो' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल हैं। संवाद से पात्रों के चरित्र पर प्रकाश पडता है। युवक के स्वगत संवाद बहुत ही अच्छे है, जिससे हमें हिमाचल प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य का पता चलता है। उपन्यास के संवाद से पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रकट होती है। कथानक को आगे बढ़ाने में संवाद सहायक हैं। इनमें कहीं भावुकता, गंभीरता तो कहीं मार्मिकता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में पुष्पा और गिरीश के संवादों में कथानक को गति देने तथा उनके चरित्र का चित्रण करने की क्षमता है। इसका कथानक आद्योपान्त रोचक, कुतूहलवर्धन होने के साथ-साथ परंपरागत औपन्यासिक कथ्य शैली का सफल प्रयोग पाया जाता है। कथानक को गतिमय बनाने में लेखक सफल हुए हैं। पात्रानुकूल भाषा लेखक की विशेषता है।

-----x-----

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 78.